

# The Gazette of India

# असाधारण EXTRAORDINARY

FART III—Section 1

भाषिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

e 12] No. 12} नई दिल्ली, गुक्रवार, मई 25, 1984/ज्येष्ठ 4, 1906 ल

NEW DELHI, FRIDAY, MAY 25, 1984/JAISTHA 4, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा का सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

# कार्यालय, सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जन रेंज,

### कानपुर

आयकर अधिनियम, 1961 [1961 का 43] की धारा 269 घ (ा) के प्रधीन अधिमुखनाएँ

कानपुर, 23 मई, 1984

निदेण नं० एम० 1587/83-84 :— अन मुझे जे० पी० हिलांरी. आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिने इसके पण्यात् 'उन्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अभीन सक्षत प्राधिकारी को यह जिल्लाम करने का कारण है कि स्थावर सम्मत्ति. जिसका उचित बाजार मृत्य रू० 25,000/- से अधिक है और जिसकी स० 9777 है सथा को बागपन मेरठ में स्थित है (और इसके उबाबद अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णान है), रिजस्ट्रोकर्मी अधिकारी के कार्यानय मेरठ में, रिजस्ट्रोकर्मी अधिकारी के कार्यानय मेरठ में, रिजस्ट्रोकरण विभिन्नम, 1908 (1908 का 16) के अजीत तारीख 23-8-83 को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचित वाजार मृत्य से कप के कृष्यमान प्रतिकार के निए अन्तरित को गई है अहर पूजे यह तिस्वास करने का कारण है कि यथानूबोंक्त सम्पत्ति का उचित वाजार मृत्य, उसके दृष्यमान प्रतिकार के सिक्ट प्रतिगत से अधिक है और अस्तरक (अस्तरकों) और अस्तरितों (अस्तरियां) के बीव

ऐसे अन्तरण के लिए तब पाया गता प्रशिक्त, तिस्तति।अत उड़ेस्य र युक्त अस्तरण लिखित में बास्तविक रूप में कीगत नहीं फिया गया है।

- (क) अन्तरण में दूर्व निनी अप का प्राप्ता अपवार अधिनित्त । 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दावित्य में कभी करने या उससे अपने में मृतिधा के लि और/या
- (खा) ऐसे किया आप या किया अन या अना अलियां को जिल्हे, भारतीय आयार अधिवित्त. 1922 (1932 का 11) या आपार अधिवियम, 1961 (1961 का 43) प्रध्यत-कर अधिवियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोगत में आतियों द्वारा पकड़ नहीं किया गर्मा था या किया जला काहिए या, जिसने में स्विधा के लिए.

अतः अस उता अधिनियन की धारा 25का के अनुवरण में, मैं उत्तन अधिनियम की धारा 269व की उन बंधा (1) के अधीन, निस्तातिश्चित क्यक्तिमों प्रयोग्...-

- 1 आजनी नरीज गुन्तः निधास (अन्तरक) श्रो मध्यसन गुन्तः निजासी —227 गुरनाज वणनाः सीतापुर
- श्रीमती नृतीस कडारियापानी यो (अल्लिप्ति) मुगेन्द्र कडारिया निवासी-10 कवना नगर, भेपठ

235 GI/84

को यह सूचना जारी करके पूर्वांक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया सूच करता हुं। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में 'भीर्डभी आर्थन :---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्याम्बन्धी व्यक्तियो पर सूचना की सामील में 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाणन की तारीख के 45 दिन के भीतर उन्त स्थावर सम्पति में हितबक्क किसी अन्य व्यक्ति झारा अधोहस्ताकरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

रपष्टीकरण :---क्ष्ममें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया रुया है।

### अनुसुची

मकान नं॰ 95/1 प्लाट नं॰ 10,कमला नमर, बागपत रोड मेरठ

तारीखः - 23-5-84ं मोहर ¶ (जो लागु न हो जमे काट दीकिए)

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME TAX, ACQUISITION RANGE, KANPUR

NOTICE UNDER SECTION 269-D (I) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)
Kanpur, the 23rd May, 1984

Ref. No. M-1587|83-84.---Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule aunexed hereto), has been transferred under the Registration Act 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Mecrut on 23-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by

the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now therefore, in pursuance of section 269-C of the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shrimati Saroj Gupta widow of Shri Satya Pal Gupta R o 227, Gurnam Bangla Sita Pur. (Transferor)
- 2. Shrimati Munish Kataria w|o Shri Surendra Kataria R|o 10 Kamla Nagar, Meerut. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used therein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

House No. 95 Plot No. 10, Kamla Nagar, Bagpat Road, Meerut.

Date: 23-5-84

Sca1

निवेश नं० एम-1471/83-84:—अतः मुझे जे०पी० हिलोरो, आयकर अधिनियम, 1961(1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उन्त अधिनियम' कहा गया हैं) की धारा 269ज के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पति, जिसका उचित बाजार मूल्य क० 25,000/- से अधिक है जिसकी सं० 6127 है तथा जो 47/2 में स्थित हैं (और इससे उपावक अनुभूनों में और पूर्ण रूप से विश्वास हैं), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय देहरादून में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 12/8/83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण हैं कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के पिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण हैं कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखिन उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखान में वास्तविक रूप में कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से दूई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम. 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायिस्व में कमी करने या उसमे बचने में मुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिनी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, उपन अधिनियम की धारा 269भ की उप धारा (1) के अधीन, निम्त-लिखित व्यक्तियों अर्थात्:—

2. श्रीमती नीलम चावला (अन्तरिती) श्री मतीश चावला, राजेन्द्र नगर कालोनी, देहरादून

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहिया | शुरू करता हूं । उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी | आक्षेप —

- (क) इस मूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (स्प्र) इस मूचना के राजपन्न मे प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पति मे हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोह्नस्ताक्षरी के पास निखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :--इसमें प्रयुक्त गब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में पिनापित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

# अनुसूची

सम्पति 47/2 प्रकाश नगर, (चाळू वाला) देहरादून

तारी**ख** : 23-5-84

मोहर:

(जो लागृन हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1471|83-84.—Whereas I, J.P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER

SCHEDULE situated AS PER SHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 12-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. Shri Vijay Kumar Arora

(Transferor)

SH. S-37 P.O. Brajrajnagan Distt-Sambadpur (Orissa).

 Shrimati Neelam Chawla Shri Satish Chawla 13|6-1 Prakash Nagar Idgah Dehradun

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

47/2 Prakash Nagar (Chakhoo Wala) Dehradun.

Dated: 23-5-84

Scal

निर्देण नं० एम-1592/83/84 :---अन मुझे जे० पी० हिलारी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिमे इसके पश्चान 'उक्त अधिनियम, कहा गया है) की धारा 269 जा के अधीन सभम प्राधिकारी की यह विश्वास करते का कारण है कि स्वावर सम्पति, जिसका उचित बाजा? मुन्य ५० 25,000/- में अक्षिक है और जिनकी मं∘ 1886 है तथा जो 11/183 राज नगर, गा० बाद में स्थित है (ओर इससे उपाबज्ञ अनुभूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रजिप्द्रीकरी अधिकारी कं कार्यालय गाँ० बाद में, रिजिव्हीहरण अधितिसन, 1903 (1908 का 16) के अधीन नारीख ..... का पूर्वीश्व सम्पनि के उचित बाजार मुख्य में कन के दूरानता प्रतिकृत के तिर् अल्लीन का गुई है और मुझे यह विग्वास करने का कारण है कि स्थापुर्वीस्त सन्धति का उचिन बाजार मत्य, उसके द्यामान भरीकन स, ऐसे द्ययमान प्रतिकत 🕏 पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) ओर अन्यस्ति। (अन्तरियों) के बोच ऐंपे अस्तरण के निर्देश पात्रा गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अत्तरण, लिखित में वास्तिक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किया आह की चावत, आपकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अप्रीत का देश व अन्तरक के दायिन्य में कमी करते या उत्तरे बजरे में मुख्या के लिए और/मा
- (ख) एसे किसी अध्य का किसी धन या अस्य शास्तियां की जिल्हें भागांत भाषकर अधिनियम, 1912 (1923 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अर्लाशिकी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किस जाता अर्थहरू था छिपाने में सुविधा के निष्

अतः अब उक्त अधिनियन की बाग 2691 के अप्रोग में. मैं उक्त अधिनियम की धारा 269प की उन्हें बाग (1) के अप्रोग निस्तिनिधान ध्यक्तियो अर्थाष्ट्र---

- श्री केणन अन्द्र सामी पुत्र श्री वितोद जन्द्र समी (अन्तरक) निकासी-सवलीक्षणन इन्डियन स्टेड्ड इन्स्टिट्युमन ७ जी एन जकर मार्ग, नई दिशाँ।
- श्री निधिन जेनलें। पुत्र औं सुभेन्द्र कुमार गर्मा (अन्तरिक्षी) नि०-27 कृष्णा नगर, नार्यन्त रोक्न अस्टल (पंजाब)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्मत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहिया णुष्टे करता हु। उक्त सम्मत्ति के अर्थन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---

- (क) इर्ण सूचना के राजात्र में प्रकार्ण को लार ख से 15 दिन की अविधि, या तत्मस्थन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामीत से 30 दिन की अविधि, को भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त कार्बियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ध) इस सूचना के राजाब से प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्वावर सम्पत्ति में हिन्दछ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास विखित में किए जा सकीं।

स्पर्शकरण ल्ल्इसम् प्रमुख्त मध्यों और पदों का, जो आवकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिमाधित है कही अर्थ होगा जा उप परवाद में दिया गया है ।

# धनुसूधी

भयन नं॰ आर 11/183 राज नगर कालानी, गाजिमाबाद तारीखा 23-5-84

माहर जा सागुन हो उसे काट दें

Ref. No. M-1592/83-84.--Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the has been transferred under annexed hereto), the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad on 17-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any inteme arising been or which ought to be disclosed by the from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not transferee for the purpose of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the atoresaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- I. Shri Keso Chand Sharma Slo Shri Vined Chand Sharma Rlo 9-B. S. Jafer Marg, Ghaziabad, (Transferor)
- 2. Shri Nitin Jaitley Soo Shri B. K. Sharma R-11 183, New Raj Nagar, Ghaziabad.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the sald Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

House No. 11 183 Raj Nagar Colony Ghaziabad.

Date: 23-5-84

Seal

निक्रेण ते॰ एम-1808/83-इ.इ. : स्वतः मुक्ते ले**॰ पी०** हिलारी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिमे इमके पश्चान् 'उक्त अधितियम' कहा गया है) की धारा 269च के अधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वान करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25 000 के०से अधिक है और जिसकी सं० 4727 है तथा जो 11622 बर्डान, मेरट में स्थित है (ओर इससे उपावड़ अनुमुक्ती में और पूर्व रूप से वर्णित है), रिक्रस्ट्रीक्ष्ती अधिकारों के कायौनय बागपन में, राजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 17-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के द्रण्यमान प्रतिकार के लिए अन्तरिंग की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि संथापुर्वोक्त नम्पति का उचित बाजार नेल्य, उसके दुण्यभान प्रक्षिफल से, ऐसे दुश्यक्षान प्रतिकृत के पन्द्रड प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के यीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया भग प्रतिकत, निम्तलिखित उदेण्यों से युक्त अलार्ग लिखिन में मध्यतिक का ये करित नहां किस गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसे अल्प की बाबत, आयकर अखिनियम, 1961 (1961 का ना) के अभीत कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उनमें वयते म मुविधा के लिए और/या
- (वा) ऐसे किया आप या किसी धन या अन्य आस्मिसों की जिन्हें भारतीय आयश्र अधिनियमं, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारो प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, किंगाने में सूतिबा के लिए

अतः अत्र उक्त अधिनियम की विशा 269ग के अनुसरण में, मैं उपत अधिनियम की धारा 269व की उपधारा (1) के अबीन, निम्न-लिखित व्यक्तिया अर्थात्:---

- श्री आस्मा राम जैन पुत्र स्वर्गीय लाशा सुल्यान सिह् (अन्धरक) मतान न० 8/632 पट्टी ब्राजिय बड़ोन-मेरट
- 2. श्री साला हेमभन्द जैन व स्पेर चन्द भैन (अन्यस्ति।) निवासी--- कस्या बड़ीत मकान नं । 1/632 पट्टी सहर प्रव बडीत जिला-मेरठ

ंका यह सुबना जारी करके पूर्वीयन सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियां मुरू करता हूं। उपत सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध मं कोई भी आक्षेप .--

- (क) क्रम मुखना के राजवन्न मे प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अयधि, या तन्यम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामीच से 30 दिन की अविक्षि, जो भी अविधि बाद में समारम होती हो, के भीतर पूर्वोदन अवस्थियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस सुवना के राजपत्र में प्रकाशन का त(रीख के 45 दिन क भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति से हित्रवह किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोद्रस्ताक्षरी के पान लिखित में किए जा मकींगे।

स्पष्टीकरण : इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदो का, जो आयक्तर अञ्चितियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिनाचित है, बहा अब होगा जो उन अन्त्राय में दिवा गया है।

### अनुमू चो

दुवान एक मजर्ला 4/622 पट्टी मेहर प्र०---बड़ीन जिला---मेरट तार<sup>े</sup>ख . 23 5-84 मूहर

Ref No. M-1808/83-84.—Whereas I, J. P. Hilori, being the competent authority under section 269B of the income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Bagpat on 17-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the preperty as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ough to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:--

- 1. Shri Atma Ram Slo Late Lala Sultan Singh H. No. 3/632, Patti Wazid Barot.-Distt. (Transferor) Meerut.
- 2. Shri Lala Hem Chand, Sumer Chand Jain So Kanta Prasad Jain, R o Badot H. No. 4 622, Patti Mehar Distt Mecrut.
  Objections, if any, to the acquisition of the said

property may be made in writing to the undersigned:

(ar) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

Shop No. 4|622, Patti Mehar Badot, Meerut.

Date: Seal:

निर्देश नं ्राप्त-17/84-85 : --अनः मृक्षे जे ० पी ० हिलोरी, आयकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'जक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा की धारा 269 ख़ा के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह ।बण्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मूल्य ६० 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 8923 है तथा जो सरचना (मेरठ) में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में पूर्ण रूप में विणित है). रजिस्ट्रीकर्तौ अधिकारी के कार्यालय सर्धना मे, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 9-8-83 को पूर्वीका सम्पत्ति के उचित बाजार मुल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वी≉त सम्पत्ति का उचिम मून्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक ( न्तरकों) और अन्सरिती (अन्तरियों) बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उबेश्यों से युक्त, अन्तरण, लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण मे हुई आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए ओर/या
- (चा) ऐमे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की: जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए;

अत. अब उपेन अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में,मैं उक्त अधिनियम की धारा 269व की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियो अर्थात्:---

- 1. श्री महबूब अली व मोहम्मद मियां (अन्तरक) [पुक्षराण-मुनवबर अली, नि० ग्राम फंसरपुर गेखपुरा, पाँ० बिनौली, जि॰ मेरठ।
- 2. श्री जियासाल, पृत्र गुलजारी लाल (अन्तरिती) एंच अस्य ग्राम फलारपुर, शेखापुरा, सरधना, जिं मेरठ।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ शुरू करता हुं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध म कोई भी आक्षेप :----

(क) इस सूचना अंक राजपत्र में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन की अवधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से दिन 30 की अवधि जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।

(खा) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उन्त स्थाबर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सहेंगे।

स्पष्टीकरण :--इसमे प्रयुक्त गब्दों और पदों का, जा आधकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के में परिमाणित है, वहीं अर्थ होगा उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

मिस्यित हाम-फलारपुर शेखपूरा, पटन वरनाया, तह० सर्धना, मिला मेरठ।

Ref. No. M-17/84-85.—Whereas I, J. P. Hilori being the mmovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule the immovable property having a fair situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Sardhana on 9-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not notice under sub-section (1) of section been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27) of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:

- 1. Shri Mehboob Ali and Mohd. Miya, So Munawar Ali, Rlo Village Fekharpur Shekhpura Post Binoli, Distt. Meerut.
- 2. Jiya Lal, So Sri Gulzari Lal and Others, Ro Village Fekharpur Shekhpura, Post Binauli, Distt Meerut.

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

(a) by any of the aforesaid persons within a a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

Land at village Fakharpur, Shekhpura, Post—Binauli Pargana-Barnawa, Tehsil Sardhana, Distt. Mecrut.

Date : 3-5-84 Seal:

निदेश नं० एम० 1564/83-84—श्रवः मुझं जे० पी० हिलोगी, श्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चान् 'उन्त श्रिधिनियम' कहा गवा है) की धारा 269ख़ के अश्रीत सभम श्रिधिकारी का यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचिन बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी मं० 18863 है सथा जो मकान न॰ आए० 11/84 में स्थित है (और इसमें उपावंद्ध मनुसूधी में और पूर्ण रूप से वणित है), रिजस्ट्रीकर्गा अधिकारी के गाजियावाद कार्यालय में, रिजस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख़ 17-3-83 को पूर्वोक्त राम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृष्णमान प्रतिकल के लिए प्रत्नरित की गई है और मुखे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके युश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृष्णमान प्रतिकल के पन्त्रह् प्रतिणत से प्रधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (प्रन्तरियों) के बीच ऐसे अस्परण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्निविधित उद्देण्यों से युक्त प्रत्तरण, लिखित में वास्यविक हप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) प्रन्तरण से हुई किसी भाग की बाबन, भ्रायकर भ्राधिनियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रधीन कर देने के भ्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुक्किश के लिए भ्रीर/
- (ख) ऐंगे किसी भ्राय या किसी धन या भ्रन्य ग्रास्तियों की जिन्हें भारतीय भ्रायकर श्रिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या ग्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर श्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भ्रन्तिती हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुशिधा के लिए

म्रतः ग्रव उक्त भ्रधिनियम की धारा 269ग के म्रनुमरण में, मैं उक्त भ्रधिनियम की धारा 269घ की उपधारा (1) के म्रधीन, निम्नलिखित क्यिक्तियों अर्थात् :--→

- श्री देवप्रकाण ग्रहोलिया पुत्र लक्ष्मी नारायन सिंह, डाईरेक्टर स्टेटियस इन्डियन स्टेन्डई इन्सीट्यंशन, 9, बीठ एसठ अपर मार्ग, नई दिल्ली (ग्रन्तरक)
- श्री करन जैतली पुत्र श्री भूगेन्द्र कुमार सर्मा, निवासी 27 क्ररण नगर, लारेन्स रोड, श्रमृतसर (पंजाब) (अन्तरिती)

- को यह मुचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरु करता हूं। उकत सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी भ्राक्षेप:---
  - (क) इस सूचना के राजपत साप्तकाशन का ताराश्व से 45 दिन की प्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
  - (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी प्रस्य ध्यक्ति बारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास निखित में किए जा सकेंगे।

स्पट्टीकरण :---इनमें प्रयुक्त शन्दों ग्रीर पदों का, जो श्रायकर श्रीधनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रष्टयाय 20 क में परिभाषित है, यही अर्थ होगा जो उस श्रध्याय में दिया गया है।

# **प्रनुस्**षी

मकान न० ग्रार-11/84 गाजियाबाद

तारीख: 23-5-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1564/83-84.--Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad on 17-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shri Deo Sarop Ahloya S|o Laxmi Narayan Singh 9B B. S. Zaf ir Road, New Delhi. (Transferor)
- Shri Karan Jaitely S|o Shri B. K. Sharma R-11|184, New Raj Nagar Ghaziabad. (Transferce)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

House No. R-11|84 Ghaziabad.

Dated: 23-5-84.

Seal:

निदेश नं एम-1476/83-84--श्रनः मुझे जे० पी० हिरोरी, आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्यात् 'उस्त प्रधिन्तियम' कहा गया है') की धारा 269 के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पन्ति, जिसके उनिन बाजार मूल्य 25,000/- से प्रधिक है भीर जिसकी सं० 6279 है तथा जो देहरादून में स्थित है (भीर इससे उपावड प्रनुसूषी में और पूर्ण कर से विश्व है), राजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय देहरादून में, रिजस्ट्रीकरण प्रविनियम, 1903 (1908 का 16) के प्रधीन तारीक 18-8-83 को पूर्वोक्त सम्पन्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के युग्यमान प्रतिकत्त के लिए भन्तरित की गई है भीर मुखे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पन्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृग्यमान प्रतिकत्त से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकत्त के प्रस्त प्रतिकत्त से भिन्तरित की उचित बाजार मूल्य, उसके दृग्यमान प्रतिकत्त से, एसे दृश्यमान प्रतिकत्त के प्रस्तरित में बाल एसे प्रस्तरण के लिए नय पाना गया प्रतिकत्त, तिम्मलित उद्देश्यों में युक्त, प्रन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) भ्रत्तरण से हुई किसी भ्राय की बायत, भ्रायकर भ्रधिनियम 1961 (1961 का 43) के भ्रधीन कर देने के भ्रन्तरक के बायित्व में कभी करने या उसमें बचने में सुविधा के लिए भ्रीप/या
- (ख) ऐसे िक्सी धाय या किसी धन या प्रत्य व्यक्तियों की जिल्हें भारतीय धायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

धनः श्रव उक्त श्रधिनियम की धारा 269ग के श्रनुमरण में, मैं उक्त श्रधिनियम की धारा 269श्र की उपधारा (1) के श्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों श्रभीत्:---

 श्रीमती विद्या बाई पत्नी स्व० श्री राज नारायन एव श्री प्रताप नारायन, बेलनगंत्र, श्रागरा

(ग्रन्तरक)

मैं० हिन्दुस्मान रेप्रोग्रेफिक्स
 द्वारा श्री एम० रघुनन्दन,
 गाजियाबाद (यृ० पी०) (ग्रन्तरिती)

को सह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के भर्जन के लिए कीर्यवाहियां सूक करना है। उक्त सम्पत्ति के धर्मन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की स्नविध, या तत्मध्यन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील में 30 दिन की श्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपद्ध में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पन्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा श्रष्टाहरूनक्षिरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :--इसमें प्रयुक्त प्राध्दों श्रीर पदो का, जो श्रायकर श्रीधनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रध्याय 20क में परिभाषित है, वही श्रश्रं होगा जो उस श्रध्याय में दियागया है।

### धन् सूची

जमीन वाके ग्राम---निरन्जनपुर, सेन्द्रल दून, देहराद्न मेय बनी हुथा सम्पत्तिं।

तारीख: 23-5-84

मोहर :

(जो सागृन हो उसे काट दीजिए)

Ref No. M-1476 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market Rs. 25,000 exceeding and PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 18-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 265-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisi-

uion of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shrimati Vidya Bai, Wo Late Sri Raj Narain and Shri Pratap Narain, Belanganj, Agra. (Transferor)
- 2. M/s. Hindustan Reprographics, C/o Shri M. Raghunandan, Ghaziabad (U.P.)

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice în the Official Gazette.

Explunation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the saul Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### THE SCHEDULE

Land situated at village Niranjanpur, Central Doon, Dehradun with construction therein.

Date: 23-5-84

Seal:

निदेश नं० एम -1868/83-84.— प्रतः मुझे जे० पी० हिलोरी, प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके परचान् 'उपत अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269क के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचिन बाजार मूल्य 25.000/- से अधिक है भीर जिसकी संठ 3537 है तथा जो गाजियाबाव में स्थित है (श्रीर इससे उपायद्ध धनुसूची में भीर पूर्ण रूप से वर्णिन है), रिजस्ट्रीकर्सा अधिकारी के कार्यालय वादरी में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 16-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचिन बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके कृष्यमान प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिगत मे अधिक है और प्रन्तरित (श्रन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तर्ण के निए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उद्देण्यों से यकत अन्तरण के निए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उद्देण्यों से यकत अन्तरण, त्रिल्विन में बास्तिवक रूप ने कथित नहीं किया गया है।

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसी श्राय की बाबस, श्रायकर ग्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रिधीन कर देने के श्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए ग्रीर/ या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या श्रम्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय भायकर भिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर भिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के अयोजनार्थ अन्तरिती अपरा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाम में सुविधा के लिए

भ्रतः श्रव उत्त स्रिधिनियम की धारा 269ग के श्रनुसरण में, मैं उक्त श्रिधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के प्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों श्रथित :—

- मै० रामप्रस्थ प्रापरटीज प्रा० लि०
   4/4, प्रासफ बली रोड, नई दिल्ली। (अम्तरक)
- 2. थीं मंदी रात्याभामा लाल, पत्नी
   श्री सुदर्णन लाल, नि० 70.
   दरियागंज, नई दिल्ली। (ग्रम्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरु करना हं । उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी अक्षीप :→→

- (क) इस सूचना ते राजपक्ष में प्रकाशन की नारीख से 45 विन की अवधि, या तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाज्य होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के ब्राग ।
- (ख्र) इस सूचना के राजपल में प्रकाणन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्वाक्षरी के पास विखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :---इसमें प्रयुक्त णड्यों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची :--

एक किता कोठी बाके ग्राम----महराजपुर

परगना---लोनी, जिला---गाजियाबाद

नारीख: 23-5-84

मोहर:

(जो लागुन हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1868 83-84,--Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), transferred has been Registration Act, 1908 (16 of 1908) in of the Registering Officer at Dadri on the office for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not

been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the sald Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. M|s Ramprasth Properties (P) Ltd., 4|4 Asaf Ali Road, New Delhi.

(Transferor)

 Shrimati Satya Bhama Lal, w|o Shri Sudarshan Lal, R|o 70, Daryagahj. New Delhi. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

One Kothi at village Maharajpur, Pargana Loni, Distt. Ghaziabad.

Date: 23-5-84

Seal:

नियंग मं एस-1590/83-84.—अतः सुन्ने जें पि ि हिलोरी, आयकर अधिनयम, 1961 (1961 का 43) जिसे इसके पश्चात् 'उकत अधिक नियम' कहा गया है) की घारा 269वा के अधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उच्चित बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं 19223 है सथा जो 81, अफगानान, विल्ली गेट, गा० बा० में स्थित है (और इसमे सपाबद अनुसूधी में और पूर्ण क्य से विणित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 23-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यभान प्रतिफल के लिए अस्तरित की गई है और मुन्ने यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, गेसे दृश्यमान प्रतिफल के पत्त्रह प्रतिगत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए नय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिवित उद्देण्यों से यहत अन्तरण, लिखित में वास्तिक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधियिनम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उसमे बचने में सुविधा के लिए और/या

(ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अल्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1923 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तिनी ग्रेगर प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

अत: अब उक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269घ की उपबारा (1) के अधीत, निम्निलिखित व्यक्तियों अर्थान् :---

- श्री राम्सिक्षन दास ठकुराल रि०-के० जे० ३७, कवि नगर, गाजियाबाद। (अन्तरक)
- श्रीमती गणी प्रभा पत्नी महेगा चंद नि०-95, अफगानान, देहली गेट, गाजियाबाद । (अन्तरिती)

को यह मूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्यक्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ शृह करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध मे ओई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाणन की तारी ख से 45 दिन की अविधि या तत्मम्बधी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोकन व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस मूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य ध्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उम अध्याय में दिया गया है।

### अनुसूची

मकान नं० 95, पुराना नं० 81, स्थित अफगानान, देहली गेट, गाजियाबाद क्षेत्र फल 210 वर्ग गज

नारीख: 23-5-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1590|83-84.--Whereas I, J.P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at as per schedule (and more fully described in the schedule been transferred under hereto), has the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad on 23-8-84 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferse for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Ram Kishandas Thukral, K. J. 39 Kavi Nagar, Ghaziabad (Transferor) :
- Shrimati Shashi Prabha w|o Sh. Mahesh Chand 95, Afghanan, Delhi Gate, Ghazibad.

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

Property styled as 95, Afghanan, Delhi Gate Ghaziabad.

Dated: 23-5-84.

Seal:

निवेण नं० एस०-1174/83-84: --अतः मुखे जे० पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चान् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269वा के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- ६० से अधिक है और जिसकी मं० 5972 है तथा जो नि० नं० 190 वहरादून में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है), रिजस्ट्रीकर्ती अधिकारी के कार्यालय देहरादन में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 8-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यामान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह

विश्वास करने का कारण है कि सथापूर्वोक्त सम्मक्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पखह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरितों (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरिण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखन उद्देश्यों से सुक्त अन्तरण, लिखित में बास्तिधिक रूप से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐंगे किसी आय या किसी धन या अध्य आस्तियों की जिल्हें . भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अ**य** जन्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुमरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269म की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थान्:---

- श्री निरंजन सिंह, पुत्र श्री गुरवत्त सिंह नि० पुराना नं० 173सी, नया नं० 190 खुरवुडा, देहरादून (अन्तरक)
- श्री देवेन्द्र कुमार जैन, पुत्र स्वर्गीय श्री सोहन पाल जैन. नि० 59, तिलक रोड, घेहरावृन (अस्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वौक्त सम्मक्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध कोई भी आक्षेप:----

- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाणन की तारीख़ से 45 दिन की अविधि, या तत्मम्बिधी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकन व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनवद्भ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अद्यांहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पप्टीकरण :--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, बही अथ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

### अनुसूची

सम्पत्ति नं । 173सी०, नया नं । 190, **खुइबुडा मुह**ल्ला, देहरादुन

तारीख: 23-5-84

मोहरः

[जो लागू न हो उसे काट दोजिए]

Ref. No. M-1474 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER

**SCHEDULE** situated AS at PER SCHE-DULE (and more fully described in schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 8-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. Shri Sardar Niranjan Singh S|o Gurdutt Singh 190, Khurbura, Dehradun.

(Transferor)

 Shri Devendra Kumar Jain, Block No. 1, 190, (Old No. 173-C) Khurbura, Dehradun.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expression, used herein as are defined in Chapter XXA of the said Ac, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### SCHEDULE

Property No. 173 (New No. 190) Khurbura Mohalla, Dehradun

Date: 23-5-84

Seal:

निवेश नं॰ एम॰-1826/83-84.—-अतः मुझ जै॰ पी० हिलोरी, भागकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् ंडक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 269क के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विषयाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित वाजार मृत्य 25,000/- रु० से प्रधिक है ग्रीर जिसकी सं० 3316 है सथा जो प्लाट तं० 7,दलाक सी, सं० 7,सूर्या नगर,गाजियाबाद में स्थित है (श्रीर इससे उपावद प्रमुस्ती में ग्रीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्री-कर्ना सिधकारी के कार्यालय दादरी में,रजिस्ट्रीकरण श्रिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन नारील 15-8-83 को पूर्वीक्त सम्पत्ति के उचिन वाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए ग्रस्तिरित की गई है श्रीर मुझे यह विश्वास करने का ग्रारण है कि सथापूर्वीक्त सम्पत्ति का उचित वाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पत्त्रह प्रतिणत से श्रधिक है ग्रीर ग्रन्तरक (श्रन्तरकों) ग्रीर ग्रन्तरिती (श्रन्तरियों) के बीच ऐसे श्रन्तरण के लिए तय पाया गया श्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण लिखित में वास्तिषक रूप से कथित नहीं किया गया है :- -

- (क) ध्रन्तरण से हुई किसी ध्राय की बाबत, श्रायकर प्राधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के भ्रन्सरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; भ्रीर/ या
- (खं) ऐसे किसी ध्राय या किसी धन या ध्रन्य ध्रास्तियों की जिन्हें भारतीय ध्रायकर श्रिधितियम, 1922 (1922 का 11) या ध्रायकर अधितियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर ध्रिधित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

श्रतः सन्न, उनन श्रधिनियम की धारा 269ग के प्रमुसरण में, मै गुन्त प्रधिनियम की धारा 269य की उपधारा (1) के प्रधीम, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थान् :--

- श्री हेम चन्द माथुर, पुत्र किशन लाल माथुर नि० लाल बाग स्ट्रीट, पटियाला (ग्रन्तरक)
- श्री रमेश लाल कपूर, पुत्र बीलत राम कपूर नि०-बी-5/162, मफदरजंग इनक्लेख, नई बिल्ली (प्रस्तरिती)

को यह सूचना जारी करके पुर्वाक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहियां भुरू करता हं। उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप:~-

- (क) इस सूचमा के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोंक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिस के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितसद्ध किसी ग्रन्थ व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरों के शाम लिखित में किए जा मकेंगे।

स्पर्ध्विकरणः:—इसमे प्रमुक्त शब्दों ग्रीर पदों का, जो श्रायकर ग्रिक्षितियमः, 1961 (1961 का 43) के श्रध्याय 20क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस श्रध्याय में दिया गया है।

### ब्रनुसूची

प्लाट मं० ७, ब्लाक सी, सेक्टर ७, सूर्यानगर, गोजियाबाद

तारीख: 23-5-84

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. M-1826/83-84.—Whoreas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dadri on 15-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concentment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. Shri Hem Chand Mathur So Kishan Lal Mathur Ro Lal Bag Street, Patiyala.

(Transferor)

2. Shri Ramesh Lal Kapoor Slo Dawlar Ram Kapoor Rlo B-5/162 Sufdarjang Enclave, New Delhi.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other persons interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### SCHEDULE

Plot No. 7 Block 'C' Sector 7, Surya Nagar Ghaziabad.

Date: 23-5-84

Seal:

निदेश नं० एम-1475/83-84:--अतः मुझे, जे० पी० हिलोरी आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके प्रश्नात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है ) की धारा 269 खा के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सस्पत्ति. जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- ६० से अधिक है और जिसकी संव 6131 है तथा जो 302 ब्लाक नं० 2 चुलब बाला देहराइन में स्थित है (और इससे उपाबड़ अनुमूची में और पूर्ण रूप से वर्षिण है), रजिस्ट्रीकर्ना अधिकारी के कत्यालया, देहरादून में, राजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन मारीख 12-8-83 की प्रवीसत सम्पत्ति के उचित बाजार मुख्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए अस्परित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा-पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दुश्यमान प्रतिकल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अद्भारियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुनिधा के लिए और/या
- (य) ऐसे किसी आय या किसी धन या अय्य अस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्तिरिसी द्वारा प्रकट मही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उप धारा (1), के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थात् :---

- श्रीमिति गुरचरन कौर पत्नी स्वर्गीय
   एम० सन्त सिह, हर महेन्द्र सिह
   हरजीत सिह, नि० 32 नेगिनिला गोड, देहरादून (अन्तरक)
- श्रीमती चन्द्र कान्ता खान पत्नी।
   डा० ऍम० बाई० खान
   न० ३, १हरिद्वार रोड, देहरादून (अम्लरिती)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ गुरू करना हूं। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भो आक्षेप:—

- (क) इस स्चना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के के भीतर उक्त स्थावर सम्पति में हिडक्ख किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अक्षोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकों।

रपार्शकरण :- इसमें प्रयुक्त मन्दों और पदों का, जो आमकर अधिनिवम, 1961 (1961 का 43) के अध्यात 20 क में पिश्मापित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिवा गया है।

### अनुसूर्च

सं० 302 ब्लाका चुक्खुबाला देहराहून

तारीख: 23-5-84

मोहर:

Ref. No. M-1475 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 12-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following person, namely:—

1. Shrimati Gurcharan Kaur Wo Late S. Sant Singh Har Mohender Singh, Harjeet Singh  $R_{0}$  32-B Nesvila Road, Dehradun.

(Transferor)

2. Shrimati Chandra Kanta Khan Wo Dr. M. Y. Khan Ro 3, I Hariender Road Dehradun. (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other persons interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### SCHEDULE

No. 302 Block,1 Chukkhuwala, Dehradun.

Date: 23-5-84

Seal

निदेश नं एम-1478/83-84:-- अतः ममे. पी० हिलीरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 क(' 43) (जिसे पण्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया मि) की 269 ख के अधीत सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सस्पत्ति, जिसका उचित वाजार मृत्य 25,000/-- ६०० से अधिक है और जिसकी सं० 1936 है तथा जो मकानशेखार हरिद्वार में स्थित है (और इससे जपायक अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्टीकर्त्ता अधिकारी के कार्यालय हरिक्कार में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधान तारीख 26-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचिन बाजार मुख्य से कम के दुस्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मझे यह विख्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मुल्य, उसके वृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे वृष्यमान प्रतिफल के 15% से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरक अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अस्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उहेरवीं से यक्त अन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप मे कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण में हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए, और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आसिनयों की जिन्हें मारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया थाया किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए:

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उप धारा (1) के अधीन, निम्निसिकाल व्यक्तियों अर्थात :---

- श्री शोभा राम सैनी पुत्र स्वर्गीय आशा राम सैनी निवासी-मोह गेषपुरा निकट ऋषिकुल विद्यापीठ हरिद्वार (अन्तरक)
- श्री तेज प्रकाश शर्मा पुत्र
   शिल प्रसाद शर्मा
   निवासी—वरहपुरा, घेलन गंन, आगरा (अन्सरिती)

को यह सुषना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां मुक्त करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अविधि था तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अविधि, जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीका के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अध्य व्यक्ति द्वारा अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पण्डीकरण ---- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिवर्णवन है, यहां अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

### अनुसूची

मकान भोख पुरा उर्क कनखन निकट ऋषिकुल, हरिक्कार ह

नारीख: 23-5-84

्मोहरः

Ref. No. M-1478|83-84:--Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act. 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reasons to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Haridwar on 26-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Aot in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:

- 1. Shri Shobha Ram Saini Slo Late Asha Ram Saini Rlo. Mowh Sekhpura Near Adhikirt Vidia Peeth Haridwar Pargana—Jawalapur, Distt—Shaharan pur, (Transferor)
- 2. Shri Tej Prakash Sharma S|o Shri Shiva Prasad Sharma R|o Brahpura, Belan Ganj, Agra.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### SCHENULE

One House Schhpura, Kankhal Near Resikul Vidiya Peeth—Jawalapur Haridwar.

Date: 23-5-84

Seal:

निवेश मं० एम-1-470/83-84 — अतः मुझे जे. पी. हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961का 43) (जिसे इनके परवात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है ) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्मक्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य के 25,000/— से अधिक है और जिसकी सं० 6063 है तथा जो 16 ए राजपुर संस्री रीड देहराइन में स्थित है (और इपने उपावद अनुसूर्वा में और पूर्ण च्या से वर्णित है) रिजस्ट्रीकर्ना अधिकारी के कार्यावय अनुसूर्वा में और पूर्ण च्या से वर्णित है, रिजस्ट्रीकर्ना अधिकारी के कार्यावय से कुम के दूष्यमान प्रतिकृत के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृष्यमान प्रतिकृत के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह उसके दृष्यमान प्रतिकृत से ऐसे दृष्यमान प्रतिकृत के लिए अन्तरित की उचित बाजार मूल्य उसके दृष्यमान प्रतिकृत से ऐसे दृष्यमान प्रतिकृत के सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य उसके दृष्यमान प्रतिकृत से ऐसे दृष्यमान प्रतिकृत के लिए त्य पाया गया प्रतिकृत निम्नलिखित उद्देखों से युक्त अन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिकृत निम्नलिखित उद्देखों से युक्त अन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिकृत निम्नलिखित उद्देखों से युक्त अन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिकृत निम्नलिखित उद्देखों से युक्त अन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिकृत निम्नलिखित उद्देखों से युक्त अन्तरण

- (क) अन्तरण से हुई िकसी आय की बाबत, आयंकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचन में मुिषधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें शान्तीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्तिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अब उत्तम अधिनियम की धारा 269ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269घ की उप धारा (1) के अधीन, निम्निक्षिस व्यक्तियों अर्थात्:—

- श्रीमक्षी दुर्गा देवी हितकारी पत्नी स्वर्गीय
   श्री बालक राम हितकारी-मि०-शान्तिवाग, आर्थ्य सी० मार्ग भेम्बर बाम्बे '11 हारा श्रीमक्षी श्रमवाला एडवीकेट, 69 मार्नीसह बालारोड देहरामून । (अम्नरक)
- 2. श्री स्वदेशी अर्शनाईजेशन चेरीटेबल सोमाइटी शान्ती निवास 16 ए, मसूरी रोड, राजपुर रोड देहरादून (अन्तरिती).

को यह मूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुक्त करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के समबन्ध में कोई भो आक्षेप:—

- (क) इस स्वता के राजपत में प्रकाणन की नारीख से 45 वित की अविध, या तत्मस्यत्था व्यक्तियों पर स्वता की तामील से 30 वित की अविध, जो भी अविध बाद में ममाप्त होती हो, के भीतर प्रवोचन व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस मूचना के राजपत्न में प्रकाणन की नारीख के 45 दिन के भीतर उकत स्थायर सम्यति में हिसबद्ध किसी अन्य स्थिति इत्या अधीहरून(करी के पास निखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:-इसमें प्रयुक्त गव्दों और गदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में गरिभावित है, वहीं अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

16 ए राजपुर भसूरी रोड, देहरादून

तारीखा: 23-5-84

मोहरः

[जो लागून हो ः से काट दं/जिए]

Ref. No. M-1470|83-84:-Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act) have reasons to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 12-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely.—

1. Smt. Durga Devi Hitkari Wo Late Balak Ram Ro Shanti Baug R.V. Marg, Chamber Bombay-21.

(Transferor)

2. S|Shri SOIR-IMC (Swedish Organisation for Individual Relief Charitable Society Shanti Niwas 16A-Mussoori Road, 25 Raj Pur Road, Dehradun.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other persons interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### SCHEDULE

16A Rajpur Mússoori Road, Dehradun.

Date: 23-5-84

Seal:

मिदेश नं ० एम०-1583/83-84: --अनः मुझे जे पी. हिलोरी, आयकर स्धिनयम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चान उक्त् अश्चितियम कहा गया है) की धारा 269 ख के अर्थीन मक्षम प्राधिकारों को यह विष्णास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य रु० 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 19133 है नया जो म० नं० 430 ए ब्लाक नं० 1राज नगर गा० बाद में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण क्य से वर्णित है) रिजिस्ट्रीकर्ता अधिकारों के कार्यालय गाजियाबाद में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन नार्गख 22-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से काम के दृष्यमान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विषयान करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृष्यमान प्रतिकल के पन्देह प्रतिगत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकत, निम्तिवित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकत, निम्तिवित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

(क) अन्तरणः से हुई किसी आय को बायत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीत कर देते के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बजने में सुविधा के लिए और/या (ख) ऐसे किसी आय किसी धन या अन्य आमिनयों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती ज्ञारा प्रकट निहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुधिधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अधीन, निम्तिलिखित व्यक्तियों अर्थात्:—

श्री आर. सी. गुप्ता (रमेश चंद गुप्ता) (अस्तरक)
 श्रित श्री एम० एन० गुप्ता
 श्रिन- आर 4/24 राज नगर, गा० बाद

श्रीमित अलका राती गुप्ता धर्मपरती (अन्तरिती)
 श्री अजय कुमार गुप्ता
 नि०-188/सी - 3 सिवील लाईनस बरेली

को यह सूचना आरी करके पूर्वोक्त सम्मित्त के अर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि जो भी अवधि बाद में समाप्त होतीहो, के शीलर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के धारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के मीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितयश्च किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:-इसमें प्रयुक्त शब्दों और पर्दो का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो इस अध्याय में दिया गया है।

### अनुसूची

भवन संख्या 4/30 व्लाक 4 राजनगर गाजियाबाद तारीखः 23-5-84 मोहरः

Ref. No. M-15/83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the effice of the Registering Officer at Ghaziabad on 22-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Incometax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. Shri R. C. Gupta (Ramesh Chand Gupta) Soo Shri S. L. Gupta Ro R 4|24 Raj Nagar Ghaziabad.

(Transferor)

2. Shrimati Alka Rani Gupta Wo Shri Ajai Kumar Gupta Ro 188 C-3, Civil Line, Bareilly.

(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later,
- (b) by any other persons interested in the said immovable property, within 45 odays from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

H. No. 4|30 Block 4 Raj Nagar Gaziabad.

Date: 23-5-84

Seal:

निवेम मं० ए०- 1726 कि एन० पी/83-84:—-अतः मुमे, जै. पी० हिलोरी आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की घारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/— से अधिक है और जिमकी सं० 6516 हैं तथा जो आगरा में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूनी में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय आगरा में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 17-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुमे यह विश्वास करने का कारण है कि सथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके वृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे वश्यमान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण, लिखित स्थाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तिक कप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (वा) ऐसे किसी आय या किसी घन या अध्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43)या धन-कर अधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायें अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

जतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की घारा 269 घ की उप धारा (1) के अधीन, निम्निक्तिका व्यक्तियों अर्थात :--

 र्श्व, पोखमल पुत्र र्थ, लीला धर (अन्तरक) नि. बास, बीडिया, मौजा -उखकर एश्मादपुर, आगरा

2 थीं केदार नाथ उम्मेद सिंह भेर सिंह (जन्तरिती) व भजन लाल पुलाण - श्री खारगजीत सिंह नि॰ बास, बोटिया, भूखवार, एरमादपुर, आगरा को मह सूचना जारी फरके पूर्विक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :--

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की नारीख से 45 विन की अवाध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नारील से 30 दिन की अवधि जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख के 46 दिन के भीतर उकत स्थावर सम्पति में हितबद किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अद्योहरहाक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:- इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

मौजा - मुखमार एत्मावपुर आगरा

तारीख: 23-5-84

मोहर:

Ref. No. A-1726 KNP 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 - and bearing number AS PER SCHEDULE situated As Per Schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 17-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration of such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transfer to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquistion of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. S|Shri Pokhmol S|o Shri Lila Dhar (Transferor) R|o. Bass Borie Mauja Ukhakar Atmadpur, Agra.
- 2. S|Shri Kedar Nath Ummed Singh (Transferce) Sher Singh & Bhejan Lal S|o Shri Khergjeet Singh R|o Bass Beria Mukhmar Atmadpur, Agra.

Objections, if any, to the acquistion of the said property may be made in writing to the undersigned:---

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

Mauja Mukhmar Atmadpur, Agra.

Date: 23-5-84

Seal:

निदेश नं०-1829/83-81 — अतः मुझे जे पी. हिलोरी, आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) के घारा 269 ख के अर्धात सक्षम प्रधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर मन्पित जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/— से अधिक है और जिसका सं० 2792 है तथा जो अलीगढ़ में स्थित है (और इससे उपाबद अनुसूची में और पूर्ण रुप से विणत है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय असीगढ़ में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन नारीख 12-8-83 की पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के वृश्यामान प्रतिफल के लिए अस्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पति का उचित बाजार मृत्य, उसके वृश्यामान प्रतिफल के लिए अस्तरित की जिस बाजार मृत्य, उसके वृश्यामान प्रतिफल के लिए अस्तरित की जिस बाजार मृत्य, उसके वृश्यामान प्रतिफल के प्रमह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरक्तें) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अस्तरण, लिखित में वास्त्रिक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अस्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के वाजित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अग्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुनिधा के लिए;

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उप धारा (1) के अधीन निम्नलिखित ध्यक्तियों; अर्थात :—

 श्री बनवारी लाल व ज्ञान चन्द्र प्रकाश (अस्तरक)
 नि० जिरोली, परगना - स्नास तहसील - अतरौली, जिला अलीगक (उ० प्र०)

(अन्तरिती) 2. श्री ताराचन्द्र व अमर नाथ पुत्रगण माहराम, नि० लमेडा नगला, पोस्ट - जिरौली पर०--गंगोरी, तहसील - अतरौली जिला-अलीगढ

को यह सूचना जारी करके पूर्वीकत सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी अ।क्षेप :-

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीखा से 45 दिन की अवधि, या तरसम्बन्धी व्यक्तियों पर भूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती ही, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (का) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उना स्थावर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोष्ठस्ताक्षरी के पाम लिखित में दिए जा सकेंगे।

स्लष्टीकरण:- इसमें प्रयुक्त गन्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिनः पित 🐌 वहाँ अर्थ श्लीमा जा उस अध्याय में विवा गया है ।

## अनुसूची

जिरीली - परगना गंगीरी, तहसील - अतरीली - अलीगढ तारीख: 23-5-84 मोहर:

Ref. No. A-1829|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000; and bearing number as per Schedule situated at As Per Schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the Office of the Registering Officer at Aligarh on 12-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely.—

1. S|Shri Banwari Lal & Gayan Chand Prakash Rlo Jirauli Pargana-Khas, Tehsil-Autrauli District—Aligarh. (Transferor)

2. S|Shri Tara Chand & Amar Nath Soo Shri Mah Ram Ro Lemara Nagle Post- Jirauli Pargana Gangiri Tehsil - Autrauli Dist-Aligarh (Transferee)

Objections, if any, to the acquistion of the said property may be made in writing to the undersigned.—

- (a) by any of the aforesaid persons within a peroid of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expression used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning given in that Chapter.

### SCHEDULE

Jirauli Pargana Gengiri Tehsil--Autrauli District—Aligarh

Date :-23-5-84. Seal:

े निवेश नं० ए०-1827/83-84 :-अतः मुझे जे. पी. हिलोरी आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चाम 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्यावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 20232 है तथा जो आगरा में स्थित है (और इससे ज्याबद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्राकर्ता अधिकारी के कार्यालय आगरा में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 4-8-83 की पूर्वीक्ट सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दूश्यामान प्रतिकल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके वृश्यामान प्रतिफल से, ऐसे वृश्यामान प्रतिफल के पन्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तब पाया गया प्रतिकल निम्निः विश्व उद्देशवीं से युक्त, अन्तरण, सिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के वायित्य में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (सा) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर क्षधिनियम, 1922 (1922 का 11) वा भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43)या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अस्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था था किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुक्तिन के लिए;

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं जनत अधिनियम भी घारा 269 भ की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों ; अर्थात :--

- (अन्तरक) 1. श्री पाटम सिंह पुत्र विद्याराम मोजा - नदौता शहसील व जिला---आगरा
- (अन्तरिती) 2. श्री कोक सिंह व भंवर सिंह बीरी सिंह व मानपाल नि० बेला भाजरा मौजा गजन पुर, तहसील व जिला - आगरा

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ शुक्र करता हु। उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी अाक्षेप ≔

- (क) इस सूचन। के राजपन्न में प्रकाशन की तारी खासे 4.5 दिन की अवधि. या तरसम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पुर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस सूचना के राजपदा में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकींगे।

स्पष्टीकरण :- इसमें प्रयुक्त गान्धों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिनाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में विया गया है।

अनुसूची

मीजा : नवीता जिला - आगरा

सारीज 25-5-84

मोहरः

Ref. No. A--1827|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authrity under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number as per Schedule situated at as per Schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 4-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the puposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act. 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. S|Shri Patam Singh S|o Vidya Ram (Transferor)

> Mauja---Nadota. Tehsil & Distt.—Agra.

2. S|Shri Cock Singh & Bhawar Singh (Transferee).

Veeree Singh & Man Pal Rlo Bela Majra, Mauja-Gajanpur. Tehsil & Distt, Agra.

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned-

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later :
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

# THE SCHEDULE

Mauja-Nabota, Distt.—Agra.

Date: 23-5-1984

Seal:

निवेश न० ए-1749/के० एन० पी०/83-84--- अतः मझे जे० पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पति जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी संख्या 20390 है तथा जो आगरा में स्थित है (और इससे उनाबद अनुसूची में और पूर्ण ६५ से बर्णित है), रिअस्ट्रीकर्त्ती अधिकारी के कार्यलय आगरा में रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारी व 9-8-83 को पूर्वोक्त सम्पति के उजित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पति का उचित बाजार मूल्य, उसके दुश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दूरयमान प्रतिकल के पत्त्रह प्रतिशत से अधिक है और अम्तरक (अम्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तम पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से मुक्त अन्तरण, सिखित में भास्तिभक्त दप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आप की बाबत, आयकर अधिलियम, 1961 (1961 का 43) के अबीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
  - (ख) ऐसे फिसी आय या फिसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में सुविधा के लिए

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269ण की उप धारा (1) अधीन निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थात:—

- श्री सचानन्थ, पुत्र श्री गोबिन्द राम ......(अन्तरक)
   30/57, नगला पीपल मंडी, आगरा एवं अन्य
- 2. श्रीमती गायत्री देवी, पत्नीश्री महेश चन्द्र गुप्ता (अन्तरिती) 1, एम०आई०जी० गोधी नगर, आगरा

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां शुरू करता हूं। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बंध में कोई भी आक्षेप:----

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की सारीख से 45 दिन की अवधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की सामिल से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इ.स. भूचमा के राजपन्न में प्रकाशम की तारी ख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थायर सम्पति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अक्षोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पट्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

### अनुसूची

सम्पति नं 20/138 अमृना किनारा, आगरा

तारीख: 23-5-84

मोहर

Ref. No. A-1749|KNP|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 9-8-83 or an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the con-

sideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- S|Shri Sachanand, S|O Shri Govind Ram, 30|57, Nagla Pipel Mandi Agra and others—(Transferor)
- 2. Smt. Gayatri Devi, Wo Shri Mahesh Chander Gupta 1-M.I.G. Gandhi Nagar, Agra—(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, which ever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

Property No. 20 138 Jamuna Kinara, Agra

Date: 23-5-84

Seal:

निदेश नं० ए० 1745 के ०एन० पी०/83/84:-- अतः मुझे जे०पी० हिलोरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 260 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पनि, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसकी सं० 8892 है तथा को अलीगढ़ में स्थित है (और इससे उपाबद्ध अनमुनी में और पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय अलीगक में, रिजस्दीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 19-8-83 को पूर्वोक्त सम्पति के उचित बाजार मृत्य से कम के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण 🕏 कि गयापूर्वोक्त सम्पति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशंत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितियां) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया या प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखिन में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर वेने के अन्तरक के वापित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- (बा) ऐसे किसी आय या किसी बन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए या, किपाने में सुविधा के लिए

**श**त: अब उक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनसरण मे, मैं उपत आंधनियम की धारा 269 म की उप धारा (1) के अधीन, निम्न शिक्ति व्यक्तियों शर्मात:---

- पूत्र श्री वृत्यावन मो० 1. श्री जगन ईमानगर सहरकोल जिता--अलीगइ--उ०प्र० (अन्तरक)
- 2. श्रीमति आशासता महेश्वरी पत्नी श्री मुरली मनोहर (अन्तरिती) महेश्वरी साफित जयगंत्र, ईसानगर अजीगढ़ को यह सुचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पतिके अर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता है। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:---
- (क) इ.स. सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 4.5 दिन की अवधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस सुजना के राजपन में प्रकाशन की तारीख के 4.5 दिन के भीतर उक्त स्थायर सम्पति में हितबढ़ किसी अन्य ज्यक्ति द्वारा अक्षोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अख्याय में विया गया है।

# अनुसूची

भकान नं 15/71 ईसानागर, सासनी दश्वाजा महर, कोल अलीगढ़

Ref. No. A-1745 KNP 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair. market value exceeding Rs. 25,000 and bearink number as per schdule situated at as per schedule (and more fully described in the been transferred under annexed hereto), has the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Aligarh on 19-8-83 or an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the partie, has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. S|Shri Jagan Swaroop, S|o Shri Brindawan Prasad, Rlo Issa Nagar Sharcol Aligarh—(Transferor)
- 2. Smt. Asha Lata Maheshwari, Wo Late Shri Murli Manohar Maheshwari Ro Jai Ganj, Issa Nagar, Aligarh-(Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned —

- (a) by any of the aforesaid persons: within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of

बारीच:--- 2 3- 5-8 4

मोडर:—

the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

### **SCHEDULE**

H. No. 15/71 Issa Nagar, Sarsni Gate Sharcol, Aligarh

Date: 23-5-84

Seal:

नियेण नं० ए—1828/83-84:—अनः मुझे जे०पी० हिलीरी, आपकर अधिनियम, 1961 (1961का 43) (जिसे इनके पश्चात उक्त अधिनियम, कहा गया है) की धारा 269ख के अधीन सक्तम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पति, जिसका उचित बाजार मूल्य 25,000/से अधिक है और जिसकी सं० 734 है तथा जो आगरा में स्थित है (और इससे उपायक अनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है) रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यांनाय आगरा में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख 10-8-83 को पूर्वोक्त सम्पति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पति का उचित बाजार मूल्य उसके दृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरितयों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तम पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देण्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्ल में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/रय
- (का) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आहितयों तीं जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11 या आयकर अधिनियम, 1961 (1961का 43) या धन-क अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट मही किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए

अतः अब उमन अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उमत अधिनियम की धारा 269 की उप धारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों अर्थातः ---

- श्री अब्दुल काविर महबूब खाँ पक्की सराय, ताजगंज, आगरा (अन्तरक)।
- 2. श्री डाक्टर्स सहकारी गृह निर्माण समिति नि० 45 विजय नगर आगरा सह सिवव-डा० प्रकाण नारायण गृप्ता आर०/ओ० 45 विजय नगर, आगरा अन्तरिती को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पति के अर्जन के निए कार्यवाहीयां गुरू करता हूं। उक्त सम्पति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप:→~
- (क) इस सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि, प्रातत्पम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिन को अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (श्वा) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पाम लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:—इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आधकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 क में परिभाषित है,) बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है। अमुसूचीः

हक हक्कृक मुकदमा

जे०पी० हिलोरी,

तारीचः 23-5-84

सक्षम प्राधिकारी

(सहायक आयकर आयुक्त, निरोक्षण,)

मोहरः

(भर्जन रेंज), कानपूर

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

Ref. No. A-1828|83-84:—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding, Rs. 25,000|- and bearing number as per schedule situated at as per schedule (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Agra on 10-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Abdul Kadir Mehmoob Khan Pakki Sarsi Taj Ganj, Agra (Transferor)
- Doctor Sahkari Greh Nirman Samiti Ltd., 45
   Vijay Nagar, Agra Seh-Sachin
   Dr. Prakesh Narain Gupta R|O 45 Vijay
   Nagar, Agra (Transferee)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the late of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later; (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Haq Haququ Mukadma

Date : 23-5-84

Seal:

J. P. HILORI Competent Authority (Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range KANPUR)